Dr. REETU RAJ

Assistant Professor

Department of HISTORY

RAJA SINGH COLLEGE SIWAN

(Jai Prakash University Chapra)

Lecture Notes on “_ प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत। "(Note --3) *(for TDC Part 1 HISTORY HONOURS)*

प्राचीन भारतीय इतिहास के पुरातात्विक स्रोत।

(iii) मुद्राएँ- मुद्राओं के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के पुरातात्विक स्रोतों में मुद्राओं का विशिष्ट स्थान है। अब तक सबसे प्राचीन प्रामाणिक सिक्के, जो हमें प्राप्त हुए, वे ‘आहत सिक्के' कहलाते हैं। इन्हें विभिन्न श्रेणी के राज्य प्रशासक अपना चिन्ह अंकित कर चलाते थे। अतः यह 'पंचमार्क’ भी कहलाते थे, ये मुख्यतः चाँदी के थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए सोने, चांदी और तांबे के सिक्कों से भी प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने में महत्वपूर्ण सहायता प्राप्त होती है। मुद्राएँ तत्कालीन राजनीतिक

धार्मिक, आर्थिक स्थिति एवं कला पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। विद्वान लेखक बी. जी. गोखले ने मुद्राओं के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, "प्राचीन सिक्के (मुद्राएँ) अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि उनके बिना

विश्वसनीय इतिहास की रचना प्राय: असम्भव है।" प्राचीन भारतीय मुद्राएँ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से निम्नांकित कारणों से महत्वपूर्ण हैं-

(अ) मुद्राओं पर अंकित तिथि से मुद्राओं को जारी करने वाले शासक की तिथि के विषय में जानकारी मिलती है।

(ब) मुद्राओं के प्राप्ति स्थलों के आधार पर विभिन्न शासकों के साम्राज्यों की सीमाएँ निर्धारित करने में सहायता प्राप्त होती है। यदि किसी शासक की एक ही स्थान पर बहुत सारी मुद्राएँ प्राप्त होती हैं तो इससे स्पष्ट होता है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का अंग रहा होगा। जिस स्थान से मुद्राएँ कम मात्रा में मिलती हैं, तो यह माना जाता है कि वह स्थान उस शासक के साम्राज्य का प्रत्यक्ष अंग नहीं रहा होगा, बल्कि उस स्थान से उस शासक के राज्य के व्यापारिक सम्बन्ध रहे होंगे।

(स) मुद्राओं से तत्कालीन राज्यों की आर्थिक स्थिति की पर्याप्त जानकारी मिलती है। स्वर्ण रजत अथवा ताँबे की मुद्राएँ आर्थिक स्थिति की स्वयं ही मापदण्ड बन जाती हैं। जो राज्य वैभवशाली होते थे, उनके द्वारा स्वर्ण धातु के सिक्के ढलवाए जाते थे और जिन राज्यों की आर्थिक

स्थिति कमजोर होती थी, उनके द्वारा रजत, ताँबे अथवा मिश्रित धातु के सिक्के ढलवाए जाते थे।

(द) मुद्राओं पर उत्कीर्ण विभिन्न देवी-देवताओं के चित्रों से तत्कालीन धर्म के विषय में जानकारी मिलती है।

(य) विदेशों में भारतीय मुद्राओं के प्राप्त होने से प्राचीन भारतीय शासकों के अन्य देशों के साथ सम्बन्धों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(र) मुद्राओं पर अंकित विभिन्न चित्रों व संगीत वाद्यों से तत्कालीन कला एवं संगीत के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

(iv) कलाकृतियाँ- भारत में विभिन्न स्थानों पर किए गए उत्खननों से अनेक कलाकृतियाँ; जैसे भित्ति चित्र, स्तम्भ, मूर्तियाँ, मन्दिर, खिलौने, आभूषण आदि विभिन्न वस्तुएं प्राप्त की गयीं हैं। इनसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति जानकारी प्राप्त होती है । इन भारतीय की कलाकृतियों में से अनेक खण्डित भी हैं, परन्तु फिर भी ये कलाकृतियाँ प्राचीन भारत के । सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से

उपयोगी हैं । सिन्धु घाटी में प्राप्त हुए खिलौने, मूर्तियाँ और

आभूषण, अशोक के स्तम्भ, विभिन्न बौद्ध प्रतिमाएँ, मन्दिरों के भग्नावशेष और मूर्तियाँ, ताँबे अथवा काँसे की मूर्तियाँ, अजंता और वाद्य गुफाओं के भित्ति चित्र आदि सभी कलाकृतियाँ प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के महत्वपूर्ण साधन सिद्ध हुए है।

(v) मिटटी के बर्तन- भारत के विभिन्न स्थानों से मिटटी के बर्तन भी प्राप्त हुए है। इन बर्तनों का भी अत्यधिक ऐतिहासिक महत्व हैं। ये बर्तन न केवल कला की दृष्टि से उपयोगी हैं, बल्कि इनकी मिटटी की जाँच करके उनकी आयु का भी पता लगाकर इतिहास के कालक्रम को जानने में पर्याप्त सहायता मिलती है।

इस विवेचन से स्पष्ट है की प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के स्रोतों का अभाव नहीं है। प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के लिए विभिन्न साहित्यिक एवं पुरातात्विक सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

References: Internet & Competitive books.